PAGE NO. 177
DATE: / /200

ट्रैजिडी

रवि को अब अपने क़स्बे में रहते हुये काफ़ी उकताहट होने लगी थी। इसकी वजह यह थी कि वह इधर कई सालों से महसूस कर रहा था कि उसके क़स्बे की ज़िन्दगी अब वह नहीं रही जो पहले थी। ज़ात पात का भेद भाव अब ज़्यादा ही बढ़ गया था और वही पड़ोसी जो इस क़स्बे में सदियों से मेल महोब्बत से रह रहे थे उनमें आपस में नफ़रत और झगड़े उठ खड़े हुये थे। वह सोचता था कि इन झगड़ों से नुक़सान ही नुक़सान हैं इसके क़स्बे का, शहर का, फिर देश का। लेकिन इसी में कुछ लोगों का ज़ाती फ़ायदा है। या तो फिर किसी इलेक्शन (ELECTION) में कुछ वोट (VOTE) ज़्यादा मिल जाते हैं। रवि ने सोचा हो सकता है देहाती और क़स्बों में लोग इतने पढ़े लिखे नहीं होते हैं। यही वजह है ज़ात पात और हर चीज का भेद भाव यहाँ ज़्यादा है। हो सकता हो शहर में ऐसी बात न हो और होगी भी तो इतनी नहीं होगी। जितनी कि उसके क़स्बे में अचानक उठ खड़ी हुई है। अब वह बहुत सन्जीदगी से सोचने लगा कि उसे क़स्बा छोड़ देना चाहिये। उसे अपने दोस्त रन्धीर सिंह और महमूद की याद आने लगी जो कि शहर में उसके अच्छे दोस्तों में से थे रन्धीर सिंह उसका क्लास फ़ैलो था और महमूद हॉस्टल में रूम पार्टनर। इन दोनों के साथ शहर में इसका बहुत अच्छा वक़्त कटता था। रन्धीर बहुत मेहनती था और महमूद बहुत हँसमुख लेकिन हमेशा ख्वाबों की दुनिया में रहता था। रन्धीर उसके बिल्कुल बरअक्स था। सख़्त मेहनत का आदी एक बार उसको कोई किताब ख़रीदनी थी और किताब बाज़ार में दस्तयाब नहीं थी वह कहीं से किताब माँग कर लाया हफ़्ते भर में उसने पूरी किताब नक़ल कर के लिख ली। उसकी सख़्त मेहनत की यह एक मिसाल थी।

रवि सोच रहा था कि आज उसे अपने दोस्तों की क्यों इतनी याद आ रही है। जब रवि अपनी पढ़ाई ख़त्म करके अपने क़स्बे वापस

चला गया था और वहाँ किसी कारख़ाने में नौकर हो गया था और अच्छी ख़ासी तनख़्वाह पा रहा था। और रन्धीर भी अम्बतसर छोड़ कर दिल्ली आकर बस गया था और वहाँ अच्छा ख़ासा कारोबार शुरू कर लिया था। रवि ने सोचा कि यह दोनों उसके साथ ही के पढ़े हुये शहरों में अच्छी ख़ासी ज़िन्दगी बिता रहे हैं और वह यहाँ क़स्बे में पड़ा हुआ है। क़स्बे के मुख़्तलिफ़ मसाइल का जुज़ बन गया है। कभी कोई उसे अपने मुक़दमे का गवाह बनाना चाह रहा है तो कहीं और, वह इसी तरह के दूसरे मसअलों में फँसा हुआ है। रवि ने सोचा कि अब आफ़ियत इसी में है की वह अब शहर में चला जाये। क्योंकि जब वह उन लोगों की तरह सोच नहीं सकता तो फिर उनके बीच रहना बहुत मुश्किल है। और फिर एक दिन उसने शहर जाने का इरादा कर ही लिया और अपने कारख़ाने को उसने कानपुर में मुन्तक़िल कर लिया। उसका टीन के डिब्बे बनाने का कारोबार था। और कानपुर में यह कारोबार और तरक़्क़ी करने लगा क्योंकि वहाँ माल की खपत बेतहाशा थी अब रवि को अपने काम के सिलसिले में अक्सर दिल्ली भी जाना पड़ता था। वहाँ वह अपने पुराने दोस्त रन्धीर से भी मिला जो कि अब दिल्ली का एक ताजिर था। रवि रन्धीर की इतनी जल्दी इतनी ज़बर-दस्त तरक़्क़ी को देखकर हैरान भी था और ख़ुश भी, वह दोनों अक्सर व बेश्तर मिलते रहते थे और उनकी गुफ़्तगू में अक्सर व बेश्तर महमूद का ज़िक्र रहता था। जिससे मिले हुये दोनों को ज़माना हो गया था। रन्धीर जो कॉलिज के ज़माने में महमूद के लतीफ़ों से कभी-कभी चिढ़ भी जाता था। आज उन्हीं लतीफ़ों को याद करके महमूद को याद किया करता था। रवि कानपुर में जिस इलाके में रहता था उसके चारों तरफ़ चिमनियों से धुआँ निकलता रहता था या फिर मिलों से काला भूरा मुख़्तलिफ़ रंगों का पानी जो वहीं बड़े-बड़े तालाब नुमा गड्ढों में भरा रहता था।

रवि सोचता था की इससे से कितना ज़हरीला पानी ज़मीन के अन्दर मौजूद पानी से जा मिलता होगा और वही पानी पास में लगे हुये ट्यूब वेल और हैन्ड पाइप के ज़रिये इस्तिमाल होता होगा कमसेकम उसके क़स्बे की फ़िज़ा में इतनी आलूदगी नहीं थी। यहाँ तो अक्सर उसे साँस लेना दुशवार हो जाता था। वह सोचता था कि इन्सान एक अच्छी सेहत मन्द ज़िन्दगी गुज़ारना चाहे तो उसको इसकी भी इजाज़त नहीं वहाँ उसके क़स्बे में ज़ेहन की आलूदगी थी और यहाँ शहर में आया तो फ़िज़ा की आलूदगी। उसका अब इन दोनों ही माहौल में जीना दुशवार हो रहा था। लेकिन जब वह दिल्ली गया तो उसने रन्धीर से अपनी इसबेचैनी का ज़िक्र किया। रन्धीर बहुत ज़ोर से हँसा कहने लगा यार तू तो हमेशा से परेशान है। अरे खुश रहा कर खुश रहेगा तो जहाँ भी रहेगा अच्छा लगेगा। तू बस छोटी-छोटी बातों को लेकर बैठ जाता है। मुझे देख शुरू में मुझे दिल्ली में जमने में कितनी परेशानी रही लेकिन मैं मेहनत करता था और खुश रहता था। कहीं दंगे फ़साद हो रहे हैं या कहीं जंग छिड़ रही है। मुझे कोई मतलब नहीं मैं बस अपने काम में मस्त मैं दिल्ली से प्यार करता हूँ और देखो दिल्ली ने मुझे कितना दिया। गाड़ी बंगला अच्छी सी सरदारिन और फिर प्यारा सा सुजीत मैं यहाँ बहुत खुश हूँ और मुझे इस बात की कभी फ़ुरसत नहीं मिली की मैं कुछ सोचूँ। और रवि ने कहा मैं जो सोच-सोच कर परेशान रहता हूँ वह कोई छोटी-छोटी बातें नहीं हैं। तुम तो सिर्फ़ पैसा कमाना जानते हो और मस्त रहते हो इस से ज़्यादा तुम सोचते ही नहीं हो। तुम्हें मालूम नहीं है कि दुनिया जैसे-जैसे तरक्की करती जा रही है इन्सानियत वैसे-वैसे पस्ती की तरफ़ जा रही है। नफ़रत और तअस्सुब बढ़ता जा रहा है। जंगलो में अब जानवरों का शिकार तो बन्द हो गया है लेकिन अब इन्सान-इन्सान का शिकार करने लगा है। आदमियों के बीच में अब इन्सानियत की दीवारें घटती जा रही हैं। मज़हब जो इन्सान को जीने की राह बताता है उसका अब ग़लत इस्तिमाल हो रहा है। और जाहिल मज़हब के ठेकेदार मज़हब का ग़लत इस्तिमाल करके इन्सानों के बीच फ़ासला बढ़ा रहे हैं आज

का इन्सान सिर्फ़ अपना ज़ाती मफ़ाद देखता है और अपने इस मफ़ाद के लिये वह कुछ भी कर सकता है। रन्धीर जो कि रवि के लेक्चर से काफ़ी बोर हो चुका था। बोला अच्छा रवि अब भाषण बन्द कर तेरी बाते सुनकर सर चकराने लगा है। अब चलो कोई फ़िल्म देखते हैं और फिर आज बाहर ही किसी अच्छे रेस्टोरेन्ट में खाना खायेंगे। और फिर बोला अरे महमूद के साथ इतना रहा उससे कुछ सीखता। देखो वह हर वक़्त कितना खुश रहता था। हँसी मज़ाक, छेड़ छाड़, लतीफ़े बाज़ी, वह सही मानी में जीना जानता था। रवि और रन्धीर फ़िल्म देखकर आये तो फिर महमूद का ज़िक्र चल पड़ा। रन्धीर ने कहा यार किसी दिन प्रोग्राम बनाओ और भोपाल चला जाये महमूद से मिलने का बहुत जी चाह रहा है। रवि बोला हाँ यार मिलना तो मैं भी बहुत चाहता हूँ अब उसे लिखो कि जब उसे फ़ुरसत हो तो वह यहाँ दिल्ली या फिर कानपुर आये। कुछ तबदीली होना चाहिये रवि और रन्धीर दोनों ही ने महमूद को लम्बा चौड़ा ख़त लिखा और उससे मिलने की ख़्वाहिश ज़ाहिर की रवि दो रोज़ दिल्ली रह कर कानपुर वापस आ गया। और फिर अपने कारोबार में मसरूफ़ हो गया। कुछ दिनों बाद उसे महमूद का ख़त मौसूल हुआ। वैसा ही सदाबहार महमूद ज़रा भी न बदला था उसने लिखा था: " रवि तुम्हारा और रन्धीर का ख़त मिला। रन्धीर का ख़त पाकर खुशी से भांगड़ा करने लगा। और सच बताऊँ तुम्हारा ख़त पढ़ कर किया क्या। फ़ौरन एक रसगुल्ला खाया। खुशी के मारे नहीं बल्कि मुँह का ज़ायक़ा ठीक करने के लिये यार जैसा बोलते हो वैसा लिखते भी हो। हां मैं अगले महीने की दस तारीख़ को रन्धीर के यहाँ पहुँच रहा हूँ तुम भी वहीं दिल्ली आ जाओ ख़बरदार अपना रोता बिसूरता चेहरा लेकर मत आना। रन्धीर को मैंने लिख दिया है कि उसके लिये हमारे पास लतीफ़ों का काफ़ी स्टाक जमा हो गया है "

तुम्हारा महमूद:

रवि वही तारीख़ को दिल्ली पहुँच गया दस की सुबह रन्धीर और रवि महमूद को लेने स्टेशन पहुँच गये। इत्तिफ़ाक़ से गाड़ी भी लेट नहीं

थी वक़्त पर गाड़ी आ गयी और महमूद साहब हमेशा की तरह हँसते हुये उसमें से बरआमद हुये, घर पहुँचे तो रन्धीर की बीवी घर के फाटक पर ही उन लोगों का इन्तिज़ार कर रही थी।

शाम का खाना खाकर यह लोग घर के लॉन्ज में बैठे थे और हल्की हल्की चुस्कियाँ ली जा रही थीं तब ही रवि बोला यार महमूद भोपाल में इनडस्ट्री वग़ैरह कितनी हैं। कानपुर में तो बेतहाशा हैं वहाँ तो लगता है कि वाक़ई आदमी खुली फ़िज़ा में साँस तक नहीं ले सकता। अपना क़स्बा इस लिये छोड़ा कि वहाँ ज़ात पात और मज़हब के नाम पर लड़ाइयाँ शुरू हो गयीं थीं। जो कमज़ोर पड़ जाता था उसे किसी बात की आज़ादी नहीं थी। शहर आये तो तअस्सुब और तंग नज़री तो है ही और साथ में माहौल की कसाफ़त भी इन सब चीज़ों को कोई सन्जीदगी से लेता ही नहीं है।

महमूद बोला तुम ठीक कहते हो रवि हम लोगों को इस के ख़िलाफ़ कुछ करना चाहिये। जब हम लोग मुख़तलिफ़ मज़हब के होते हुये आपस में इतनी मोहब्बत रखते हैं तो क्या वजह है, बाक़ी लोग नहीं रह सकते रन्धीर बोला अरे महमूद अभी तक तो रवि भाषण दिया करता था। अब तू भी तक़रीर झाड़ने लगा यार यह रवि ऐसे ही डराया करता है। सब आपस में मिल जुल कर रहते हैं कोई किसी का दुश्मन नहीं।

दूसरे दिन यह लोग नाश्ता वग़ैरह करके रन्धीर का कारख़ाना देखने के लिये घर से निकले, कारख़ाने के पास पहुँचे ही थे एक जगह कुछ भीड़ नज़र आयी रन्धीर ने गाड़ी रोकी और पूछा क्या माजरा है पता चला कि मिसिज़ इन्दिरा गाँधी को उनके सिक्योरटी गार्ड ने गोली मार दी है और वह हॉस्पिटल ले जायी गयी हैं। यह ख़बर सुनना था कि तीनों दोस्त बिल्कुल सन्नाटे में आ गये। ज़ाहिर है अब कारख़ाने कौन जाता तीनों वापस घर आ गये। शाम की ख़बर से पता चला की मिसिज़ गाँधी नहीं बच पायीं और चल बसीं। और तीनों को ख़बर दस्तसदमां पहुँचा। इतनी बेदर्दी से मिसिज़ गाँधी क़त्ल कर दी गयीं किसी को यक़ीन नहीं आ रहा था। रन्धीर को दोहरा सदमा था,

एक मिसिज़ गाँधी की मौत का ग़म और दूसरे यह कि मारने वाले सिख थे। रवि और महमूद उस को बार-बार समझा रहे थे कि मिसिज़ गाँधी के क़त्ल पर सदमा पहुँचना तो क़ुदरती बात है लेकिन वह इस बात पर न परेशान हो कि मारने वालों के सर पर पगड़ी बन्धी थी। मारने वाले तो कोई भी हो सकते थे। सुबह रन्धीर ने कहा कि चलो मिसिज़ गाँधी के जसदेख़ाकी के दर्शन कर आया जाये। रवि ने उसे समझाया कि माहौल कुछ ठीक नहीं है ऐसे में तुम्हारा बाहर निकलना ठीक नहीं। रन्धीर बोला- माहौल क्या ठीक नहीं, क्या कोई मुझे भी मार सकता है। तो यहाँ दिल्ली में नया है रवि दिल्ली में मैं अरसे से रह रहा हूं। जैसे- मैं दिल्ली से प्यार करता हूँ। दिल्ली भी मुझसे बहुत प्यार करती है। यहाँ सब मेल जोल से रहते हैं। मुझे कोई कुछ नहीं कहेगा तू ख़्वाह-मख़्वाह डरा करता है। नहीं रन्धीर- रवि ठीक कह रहा है तुम्हारा इस वक़्त बाहर निकलना ठीक नहीं है महमूद बोला- चार तू भी रवि की बातों में आ गया, अरे भाई दिल्ली में तो मैं रहता हूँ तुम लोग फ़िक्र मत करो फिर अपनी बीवी से बोला चलो तुम तैयार हो जाओ। महमूद जल्दी से बोला नहीं भाभी को रहने दो, दोपहर का खाना घर पर ही खायेंगे वह भी भाभी के हाथ का पका हुआ। रवि और महमूद जानते थे की रन्धीर को वह अब नहीं रोक सकते वह जो ठान लेता है तो पूरा ही करता है बहर-हाल तीनों दोस्त कार पर घर से निकल पड़े, अभी दो ही किलो मीटर चले होंगे की पचास साठ लड़कों का एक जुलूस नज़र आया और उन्होंने हाथ देकर कर रुकवाया। रन्धीर ने गाड़ी रोकी और खिड़की से मुँह निकाल कर अपने मख़सूस अन्दाज़ में बोला क्या बात है उस वक़्त शोर बुलन्द हुआ सरदार हैं सरदार हैं मारो- मारो और वह सब रन्धीर को गाड़ी से खींच कर बाहर निकालने लगे, रवि और महमूद को जैसे साँप सूँघ गया हो वह दोनों सोच रहे थे कि अब रन्धीर का क्या हश्र होने वाला है इतनी देर में रन्धीर पर लाठियों और लोहे की सलाख़ों से वार पड़ने लगे, रन्धीर बेतहाशा चीख़ रहा था बचाओ-बचाओ और महमूद और रवि उसकी ज़िन्दगी के लिये मजमें के सामने गिड़गिड़ा कर

भीक माँग रहे थे रवि कह रहा था इस को छोड़ दो इसका न या क़सूर। यह ग़द्दार नहीं है इसका एक भाई देश की रक्षा करता हुआ देश पर बलिदान हो चुका है महमूद चीख़ रहा था इसको मत मारो-इसको मत मारो, इसका एक बहुत छोटा बच्चा है इसके बदले मुझे मार लो, इसको छोड़ दो, लेकिन मजमां पर दीवांगी सवार थी महमूद और रवि की ~~चीखें~~ उनके क़हक़हों में दब गयीं थीं और रन्धीर का बेजान जिस्म। ज़मीन पर पड़ा था।

आज रवि को कानपुर आये हुये एक महीने से ज़्यादा हो गया था लेकिन उसकी हालत ख़राब थी, रन्धीर उसे मुसलसल याद आये चला जा रहा था, हर वक़्त उसकी कानों में रन्धीर और मजमे के पागल क़हक़हे गूंजा करते थे। ~~वह रन्धीर के इस अन्जाम पर बहुत दुखी था, महमूद ने उसे लिखा था कि आज कल वह बहुत परेशान रहता~~ रवि मुसलसल सोचा करता था इतने अच्छे आदमी का इतना दर्दनाक अन्जाम, उधर उसके पास महमूद के ख़त बराबर आते थे। वह रन्धीर के इस अन्जाम पर बहुत दुखी था। महमूद ने उसे लिखा था कि आजकल वह बहुत परेशान रहता है कुछ दिन के लिये वह भोपाल आ जाये। और लिखा था कि रवि मैं तुम्हारी बातों को सन्जीदगी से नहीं लेता था लेकिन तुम्हारी बातें हर्फ़-ब-हर्फ़ सही हुईं सोचते हैं कि वक़्त आ गया है कि हम नौजवान कोई ऐसा क़दम उठायें जिसे कमअज़कम फ़िरक़ा वाराना आहंगी तो पैदा हो। वरना यह तअस्सुब हमारे मुल्क को डिबो देगा, तुम जल्द भोपाल आओ तुम से बहुत सी बातें करनी हैं महमूद का ख़त आये हुये काफ़ी दिन हो चुके थे रवि अपने को तैयार नहीं कर पा रहा था कि भोपाल का सफ़र कर सके रन्धीर की मौत ने उसके आसाब पर बुरा असर डाला था, लेकिन उसके पास महमूद के कई ख़त और आये और हर ख़त में उसे भोपाल आने का इसरार था। रवि ने सोचा अब भोपाल चला ही जाना चाहिये महमूद काफ़ी परेशान है हम दोनों मिलेंगे तो शायद दोनों ही का ग़म कुछ ग़लत हो, रवि ने रिज़रवेशन कराया और अपने पहुंचने की तारीख़ की इत्तिला महमूद को देदी।

महमूद स्टेशन पर मौजूद मिला। किस क़दर दुबला हो गया था। महमूद जिसके चेहरे पर हमेशा एक शरीफ़ी मुस्कुराहट रहती थी। उसका दूर-दूर पता नहीं था, उसने कहा अच्छा हुआ रवि तुम आ गये। ~~रवि भी अपने ऊपर क़ाबू न रख सका और वह दोनों दोस्त~~ अब तुमसे बात करके कुछ दिल हल्का होगा,। रन्धीर बड़ा बेवफ़ा निकला कितनी जल्दी साथ छोड़ गया। और एक दम महमूद की सिसकियाँ निकलने लगीं। रवि भी अपने ऊपर क़ाबू न पा सका और वह दोनों दोस्त वहीं स्टेशन पर बेतहाशा रोने लगे।

महमूद रवि को लेकर अपने घर आया। महमूद का घर वहीं स्टेशन के नज़दीक ही था छोटा सा ख़ूबसूरत दो कमरों का घर, रवि को महमूद का घर बहुत पसन्द आया। दोनों दोस्त काफ़ी रात तक बातें करते रहे। महमूद कह रहा था कि यार रवि अब ज़िन्दगी पर से एतबार बिल्कुल उठ गया है भला बताओ कभी सोचा था कि रन्धीर हम लोगों से इस तरह बिछड़ जायेगा और सबसे बड़ी बात तो यह है कि वह हमारी नज़रों के सामने मार दिया गया और हम सिवाये गिड़गिड़ाने के कुछ न कर सके। रवि ने चाय पी और फिर अख़बार पढ़ने लगा महमूद किचन में नाश्ता बना रहा था। महमूद घर में अकेला ही रहता था उसके माँ बाप भोपाल के पास एक गाँव में रहते थे और कभी-कभी महमूद के पास शहर आकर रह जाते थे वरना उन्हें अपनी ज़मीन जायदाद से फ़ुरसत नहीं मिलती थी। रवि अख़बार लिये वहीं बावर्चीख़ाने में पहुँच गया रवि बोला यार शादी क्यों नहीं कर लेते। कम अज़ कम नाश्ता खाने का तो आराम मिल जायेगा। महमूद बोला लगता है अल्लाह मियाँ ने मेरा जोड़ा बनाया नहीं है फिर रवि से बोला चलो जल्दी से नाश्ता करो फिर बाहर निकला जाये अपना गाँव कल दिखाने चलूँगा। महमूद और रवि भोपाल के मुख़्तलिफ़ इलाक़ों से गुज़र रहे थे।

दोपहर काफ़ी हो गयी थी और दोनों को अब काफ़ी भूख भी लगने लगी थी। दोनों एक होटल में गये। थोड़ी ही देर में वेटर उनके सामने

प्लेटें सजा रहा था महमूद बोला यार रह-रह कर रन्धीर याद आता है। काश हम उसे बचा सकते महमूद बोला रवि अब घर चला जाये। थक न गये हो तो एक आध जगह और घूम लिया जाये। रवि ने सोचा इस वक़्त घूमना ही बेहतर है महमूद उस वक़्त काफ़ी रन्जीदा हो गया था इस वक़्त तो कपड़े बदलने का भी दिल नहीं चाह रहा है। जी चाह रहा है कि ऐसे ही लेहाफ़ में घुस जाऊँ महमूद ने कहा हाँ हमारा भी दिल यही चाह रहा है और महमूद ने जूता उतार कर फेंका और उन्हीं कपड़ों में दलांग लगा दी। अच्छा शबबख़ैर, और महमूद ने लेहाफ़ अपने ऊपर तान लिया। रवि ने भी कपड़े बदले लाइट बुझाई और अपने बिस्तर पर दराज़ हो गया। थोड़ी देर में दोनों ही गहरी नींद सो रहे थे। रवि की एक दम आँख खुल गयी कुछ अजीब सी बदबू उसे महसूस हो रही थी उसने देखा महमूद भी एक दम उठ बैठा है उसने कहा यार महमूद यह कैसी बदबू है मुझे साँस लेने में दुशवारी हो रही है बाहर कुछ शोर की भी आवाज़ आ रही है। महमूद बोला यार रवि लगता है कहीं लड़ाई झगड़ा फ़साद हुआ है। और पुलिस ने आँसू गैस वग़ैरह छोड़ी है यह उसकी बदबू लगती है फिर महमूद ने खिड़कियाँ वग़ैरह चारों तरफ़ से बन्द कीं ताकि गैस अन्दर न आये और पंखा फुल स्पीड से चला दिया और रवि से बोला कि तुम लेहाफ़ अच्छी तरह ओढ़ कर लेट जाओ। इस तरह से आँसू गैस का असर ख़त्म हो जायेगा और मैं अभी आया देखें बाहर क्या चक्कर है रवि ने कहा नहीं बाहर मत जाओ बाहर ख़तरा लगता है। महमूद ने कहा नहीं ख़तरा वग़ैरह कुछ नहीं है इलाक़ा हमारा तो देखा ही हुआ है मैं अभी आता हूँ। फिर महमूद ने रवि को पलंग पर ढकेला और उसको लेहाफ़ उढ़ा कर बाहर निकल गया।

पता नहीं उस गैस का असर था या फिर नींद का असर कि रवि दिन चढ़े तक सोता रहा। उसकी आँख खुली तो उसने देखा कि धूप खिड़कियों के शीशे से छन कर कमरे में अन्दर आ रही है। रवि ने महमूद के पलंग की तरफ़ देखा और एक दम चौंका। अरे महमूद अब

तक वापस नहीं आया। उसने जल्दी से चप्पल पहनी और घर के बाहर निकल आया। रवि का सर जैसे घूम गया। उसको हर तरफ़ लाशें ही लाशें नज़र आ रही थीं, औरतों की, मर्दों की, बच्चों की, और जानवरों की भी, अरे भगवान रात भर में क्या हो गया, है कैसी क़यामत है महमूद कहाँ गया,, रवि के कुछ समझ में नहीं आ रहा था। उसका दिमाग़ एक दम माऊफ़ हो गया था। रवि के कान में आवाज़ सुनाई पड़ी कोई किसी से कह रहा था कि पास के यूनियन कार्बाईड कारख़ाने से ज़हरीली गैस ख़ारिज हुई है। उसने यह क़यामत बरपा की है। रवि को जैसे एक दम होश आ गया। वह बड़ी ज़ोर से चीख़ा महमूद, महमूद तुम कहाँ हो, फिर वह पागलों की तरह हर लाश का चेहरा सीधा करके देखने लगा। तभी एक साहब ने उसके कान्धे पर हाथ रखकर पूछा आप किस महमूद की बात कर रहे हैं वह तो नहीं जो सामने वाले सफ़ेद मकान में रहते हैं। हाँ, हाँ वही रवि फिर चीख़ रहा था बताओ वह कहाँ हैं महमूद साहब तो रात भर बेहोश मरीज़ों को कमर पर लाद-लाद कर पास वाले अस्पताल ले जा रहे थे। उन्होंने तो बड़ा काम किया है सैकड़ों जानें बचायी होंगी अभी एक घन्टा पहले वह विष्नु काका को लाद कर अस्पताल की तरफ़ जा रहे थे। तबसे वो लौट कर नहीं आये। रवि बेतहाशा अस्पताल की तरफ़ भागा अस्पताल पास ही में था उसे वहाँ पहुँचने में वक़्त नहीं लगा। अस्पताल के लॉन में सैकड़ों आदमी पड़े हुये थे। रवि मुसलसल महमूद, महमूद चिल्लाये जा रहा था। एक जगह एक डाक्टर एक आदमी पर झुका हुआ था। रवि ने जैसे डाक्टर को झिन्झोड़ दिया डाक्टर महमूद कहाँ है मेरा दोस्त कहाँ है। फिर एक दम से उसकी निगाह उस आदमी पर पड़ गयी जिस पर डाक्टर झुका हुआ था। अरे महमूद, डाक्टर यही महमूद है। यह ज़िन्दा तो है कहिये यह ज़िन्दा तो है। डाक्टर ने पूछा आप इस आदमी को जानते हैं। यह बहुत बहादुर इन्सान था। सारी रात यह नाक पर मफ़लर लपेटे बेहोश मरीज़ों को कमर पर लाद-लाद कर अस्पताल लाता रहा और आख़िर में ख़ुद भी इस मोहलक क़ातिल गैस का शिकार हो गया।

दूसरे रोज़ रवि महमूद के गाँव तो गया लेकिन महमूद की लाश के साथ, महमूद के माँ बाप को कैसा तोहफ़ा पेश किया था उसने सोचा भी नहीं था। रवि कानपुर लौट आया था और हर वक़्त यही सोचा करता था कि महमूद बहादुर था कितना ग्रेट था। उसने कितने शानदार तरीक़े से मौत को गले लगा लिया। अपनी एक जान के बदले में कितनी जानें उसने बचायीं क्या कोई कर सकता है ऐसा खिड़कियाँ बन्द करके पंखा चला के लेहाफ़ तान कर क्या वह भी अपनी जान नहीं बचा सकता।

• • •